International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(III), October - December, 2025, pp. 50-54

काव्य प्रयोजन : हिन्दी काव्य शास्त्र के संबंध में

डॉ. संगीता कुमारी*

सहायक आचार्य हिन्दी, श्री राधा गोविन्द राजकीय महाविद्यालय, कंवर नगर, ब्रह्मपुरी, जयपुर।

*Corresponding Author: sihagsangeeta1@gmail.com

Citation: कुमारी संगीता. (2025). काव्य प्रयोजन : हिन्दी काव्य शास्त्र के संबंध में. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(III)), 50–54.

सार

मानव के प्रत्येक कर्म से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कोई न कोई प्रयोजन अवश्य निहित रहता है। प्रयोजन से तात्पर्य उन उपलब्धियों से है जो किसी कार्य से प्राप्त होती है। काव्य रचना में कवि का जो उद्देश्य होता है। वह ही काव्य–प्रयोजन कहलाता है। कुलपति – ''यश, सम्पत्ति, अलौकिकला आनन्द, दुखोः का नाश, लौकिक चातुर्य और कान्तासम्मित उपदेश, ये छः काव्य के प्रयोजन होते हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी1 ने यश के स्थान पर 'ज्ञान–विस्तार' और 'मनोरंजन' को ही काव्य–प्रयोजन माना है। लोकमंगल ही काव्य का प्रयोजन है। मैथलीशरण गुप्त2 जी ने काव्य के दो प्रयोजन माने हैं – मनोरंजन और उपदेश – ''केवल मनोरंजन न कवि का, कर्म होना चाहिए। उसमें उचित उपदेश का भी, मर्म होना चाहिए।'' जयशंकर प्रसाद3 की मान्यता है – ''संसार को काव्य से दो तरह के लाभ पहुँचते हैं – मनोरंजन और शिक्षा।'' सुमित्रानन्दन पन्त4 ने :स्वांतः सुख' और 'लोक–हित' ये दो प्रयोजन स्वीकार किये हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक काल में काव्य–प्रयोजनों पर मौलिकता से विचार हुआ है – आधुनिक आचार्यों तथा कवियों ने युगीन आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर काव्य–प्रयोजनों का विवेचन किया है।

शब्दकोशः *प्रयोजन, कल्पनागत अनुभव, जीवन दर्शन, नैतिक दृष्टिकोण, पलायन, विकास व उत्कर्ष।*

प्रस्तावना

काव्य प्रयोजन को लेकर अनेक मतवाद प्रचलित हुए हैं। यह मतवाद आधुनिक युग में ही दिखाई पड़ते हैं जिनका प्रमुख कारण **पाश्चात्य** प्रभाव है। काव्य को कला के अन्तर्गत मानकर, कला के प्रयोजन को लेकर विभिन्न एकांगी मत देखने को मिलते हैं जिनमें प्रमुख पर यहाँ पर विचार करेंगे।

कला कला के लिए

काव्य और कला के अत्यधिक नैतिक, धार्मिक प्रचारवादी दृष्टिकोण ने इस वाद को जन्म दिया। काव्य उपदेश प्रधान हो और जीवन में उपयोगी बातों को ही अभिव्यक्त करें या धार्मिक प्रचार का साधन बने, इस धारणा के विरूद्ध कुछ अश्लील कही जाने वाली और कठोर नैतिकता के विपरीत विद्रोह जगाने वाली कविता के समर्थन के बीच कला, कला के लिए अथवा कविता, कविता के लिए है। नैतिकता या धार्मिक उपदेश के लिए नही, और उपयोगिता की स्थूल कसौटी पर वह नहीं कसी जानी चाहिए, इस दृष्टिकोण का जन्म और प्रचार हुआ। ऑस्कर वाइल्ड और उनके साथी तथा डाक्टर ब्रेडले ने मत का समर्थन किया। सैद्धान्तिक–दृष्टि से देखा

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

जाए, तो इसके दो पक्ष स्पष्ट होते हैं। एक पक्ष कवि या कलाकार का है और दूसरा पक्ष है समाज, पाठक या श्रोता का। कला कला के लिए है या काव्य–काव्य के लिए है, इस मत की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि यह है कि कवि या कलाकार कविता या कलाकृति की रचना करते समय कोई निश्चित प्रचारवादी या उपदेशात्मक उद्देश्य को लेकर नहीं बैठता। उसकी प्रतिभा के स्वच्छन्द प्रस्फुटन के लिए प्रयोजन और उद्देश्य का कोई बन्धन या सीमायें नहीं होनी चाहिए अन्यथा उसका पूर्ण विकास न हो सकेगा। कवि या कलाकार का प्रमुख उद्देश्य काव्य के लिए ही है किसी प्रयोजन के लिए नहीं। परन्तु इस मत या सिद्धान्त के समर्थन और प्रचार के लिए करना अनुचित है। क्योंकि वह तो मूलतः कला या काव्य के स्वभाव के विरूद्ध है उससे सामूहिक और उत्कृष्ठ आनंद प्राप्त नहीं हो सकता। कला, कला के लिए है इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण विचार डॉ. ब्रैडले के है जो उनकी पुस्तक ग्वावितक स्मबजनतमे वद च्वमजतल में प्राप्त होते हैं।

उनके विचारों और तर्कों का संक्षेप इस प्रकार है –

- कविता विविध अनुभवों का क्रम है जो हमें ध्वनियों, कल्पनाओं, विचारों, भावनाओं आदि के रूप में कविता के पढ़ते समय प्राप्त होता है। यह अनुभव काल्पनिक होता है और प्रत्येक पाठक एवं प्रत्येक पाठ के साथ भिन्न रूप में प्राप्त होता है। इस प्रकार एक कविता अनेक कोटियों में रहती है।
- कविता, कविता के लिए है। इस सूत्र से ये बातें समझनी चाहिए प्रथम यह अनुभव स्वयं ही साध्य है और इसका अपना निजी स्वतंन्त्र मूल्य है। द्वितीय काव्य का मूल्य यही अनुभव है। कविता का महत्व इसके अतिरिक्त अन्य बातों में भी देखा जा सकता है जैसे धर्म, संस्कृति उपदेश, शान्ति, अर्थ प्राप्ति आदि परन्तु काव्य का यह महत्व उसके काव्यात्मक मूल्य को निश्चित नहीं करता जिस प्रकार वह एक कल्पनागत अनुभव के रूप में हमें प्राप्त होता है। तृतीय यह है कि अन्य प्रयोजनों से काव्य का वास्तविक मूल्य बदला नहीं वरन् घटता ही है।
- कविता के लिए विषय का महत्व नहीं है और न यही कहा जा सकता है कि उसके बिना कविता केवल रूप अभिव्यक्ति है। अतः कविता का मूल्य विषय में न रहकर समस्त कविता में है क्योंकि एक ही विषय पर अनेक कोटियों की कविता लिखी जा सकती है। कविता न केवल विषय है और न केवल रूप या शैली। अतः कविता, कविता ही है। उसमें एक को दूसरे से अलग कर नहीं देखा जा सकता दोनों का एकीकरण ही साहित्य का सार या मूल रूप है अतः जब कविता के तत्वों को अलग करके नहीं देखा जा सकता, तो कविता का प्रयोजन कविता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यह सभी कलाओं के लिए सत्य है।

कवि या कलाकार की दृष्टि से कला, कला के लिए है, यह मत मानते हुए भी पाठ्य या श्रोता की दृष्टि से दूसरे प्रयोजन स्वतः आ जाते हैं। जब कोई रचना का पाठ करता है या कलाकृति का अवलोकन करता है, तो उसे आनन्द प्राप्त होता है। हो सकता है कि उससे उसे जीवन में कोई प्रेरणा भी प्राप्त हो, कोई शिक्षा मिले अथवा थोड़ी देर के लिए वह चिन्ताग्रस्त परिस्थितियों से निकलकर कलाकार के काल्पनिक संसार में विचरण करने लगे। ऐसी दशा में जिसे कलाकार के लिए केवल कला के दृष्टिकोण से रचा है, वही पाठक के लिए अनेक प्रयोजनों से युक्त हो जाती है।

कला जीवन के लिए

काव्य और कला जीवन के लिए है, इसे कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। जीवन के विकास और उत्कर्ष के साथ कला कास्थान महत्वपूर्ण होता जा रहा है, उसकी व्यापकता बढ़ती जा रही है। यदि काव्य और कलाओं को जीवन से निकाल दिया जाये तो जीवन का जो रूप होगा उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त काव्य जीवन को प्रेरणा प्रदान करता है उसमें एक सरता और उत्साह का संचार करता है। उदासी और चिन्ता के क्षणों में मन को प्रसन्न करने की उसमें शक्ति है। आदर्श और यथार्थ जीवन के दोनों पक्षों का चित्रण, काव्य करता है। यथार्थ के आधार पर हम आदर्श की और अग्रसर होते हैं। जीवन को काव्य

एक विशेष सुन्दर, स्वस्थ उदात्त दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है। हम एक साथ थोड़े ही समय में व्यापक ओर सम्पूर्ण जीवन का दर्शन कर ज्ञान, आनंद और शिक्षा प्राप्त करते हैं।

प्रेमचंद[5] ने साहित्य का प्रयोजन इस प्रकार माना है –

''साहित्य हमारे जीवन को स्वाभाविक और सुन्दर बनाता है। दूसरे शब्दों में इसकी बदौलत मन का संस्कार होता है। यही उसका मुख्य उद्देश्य है।

साहित्य के द्वारा हमारी वृत्तियों का परिस्कार होता है। गुप्त[6] ने साकेत में कहा है –

''मानते हैं जो कला के अर्थ ही

स्वार्थिनी करते कला को व्यर्थ है।''

महात्मा गांधी ने भी कला के प्रयोजन की व्याख्या करते हुए कहा है, – ''कला वह है जो जीवन को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए। कला से जीवन का महत्व है। कला जीवन को वास्तविकता की ओर ले जाती है। वास्तव में महान कलाकार की कृति तो सत्यं, शिवम् सुन्दरम् का सुन्दरतम् निदर्शन होती है।

जीवन से पलायन के अर्थ में

इस सिद्धान्त के पृष्ठ पोषक वे लोग हैं जो संसार की विषमता तथा संघर्ष का सामना करने में असमर्थ है तथा काव्य और कला को सुवासित कोड़ मानते हैं। इन लोगों का विचार है कि संसार का सुधार करना असंभव है। अतः उसके संघर्ष में पड़कर व्यक्तिगत सुख शान्ति भंग करना व्यर्थ है। कला के आनंददायिनी गोद में वे अपने दुःखों को भूलना चाहते हैं। ऐसे मनुष्य वास्तविकता की कठोर भूमि का परित्याग कर कल्पना के परों पर स्वप्न लोक में विचरण करना चाहते हैं। **प्रसाद**[7] जी की निम्न पंक्तियाँ इसी पलायनवाद की द्योतक है।

''ले चल वहाँ भुलावा देकर

मेरे नाविका धीरे–धीरे

जिस निर्जन सागर में लहरी

अम्बर के कानों में गहरा।।''

निराला[8] जी की पंक्तियाँ

हमें जाना है जग के पार

जहाँ नयनों से नयन खिले।

श्री बच्चन जी का 'आकुल अन्तर' काव्य संग्रह इसी प्रकार के स्वस्थ पलायन वाद का उदाहरण है।

कला जीवन में प्रवेश के अर्थ में

कला का उद्देश्य जीवन से पलायन करना नहीं अपितु इस संघर्षमय जीवन में प्रवेश कर सौन्दर्य की झाँकी देखना है, संसार के करूण क्रन्दन तथा दुःख में भी एक विशेष सौन्दर्य है –

इस धरती के रोम–रोम में भरी सहज सुन्दरता प्रसाद ने जीवन को जगाया भी है –

'अख जागो जीवन के प्रभाता'

सेवा के अर्थ में

काव्य–कला से मानवता की सेवा करना और सद्भावनाओं का प्रचार करना यह प्रचारवादी और नैतिक दृष्टिकोण ही है। काव्य अथवा कला सेवा होती ही रहती है। कलाकार स्वयं अपने युग की आवश्यकता के अनुसार अपनी चेतना में कोई मानव सेवा का सिद्धान्त अंगीकार करता है, ऐसी दशा में स्वभावतः वह उसकी कृति में प्रतिबिम्बित होगा परन्तु सेवा का उद्देश्य लेकर बैठने से कला की उत्कृष्टता में बाधा पड़ेगी, प्रेमचंद के

इस प्रकार के उद्देश्य से ही गोदान उपन्यास के भीतर जो कलात्मक सफलता और प्रभाव है। वह उद्देश्य और आदर्श को प्रधान बनाकर लिखे गये अन्य उपन्यासों में नहीं है। टाल्सटॉय इस मत के समर्थक थे।

कला मनोरंजन व आनंद के अर्थ में

काव्य और कला का प्रमुख ध्येय मनोरंजन और आनन्द माना जाता रहा है। काव्य से मनोरंजन होता है। उसके मनन से आनन्द मिलता है। इसमें संदेह नहीं, इसकी आनंददायिनी शक्ति के कारण ही काव्य को ब्रह्मस्वाद सहोदर भी कहा गया है। काव्य का आनन्द लोकगीत है क्योंकि इसमें अर्न्तवृत्तियों की पूर्ण तन्मयता रहती है और इससे मानसिक प्रसन्नता और आत्मिक विकास भी होता है, काव्य अथवा कला के इस उद्देश्य के सम्बन्ध में मतभेद नहीं। इस प्रयोजन को सभी मानते हैं।

आत्म साक्षात्कार के अर्थ में

कविता और कला में कृति आत्म साक्षात्कार करता है। अपनी अनुभूतियों व आकांक्षाओं को पकड़ता है और अभिव्यक्ति प्रदान करता है। विश्व और जीवन का जो प्रतिबिम्ब उसके मानस–पटल पर अंकित हुआ है उसे समझना और उसी प्रकार चित्रित करना कलाकार का ध्येय है। इस आत्म साक्षात्कार की दशा में उत्कृष्ट कलाकार लोकात्मा का भी साक्षात्कार करता है। अतः जब वह अपने अनुभव का प्रकाशन करता है तब भी उसमें लोक अपनी निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति पाता है। किसी–किसी अवस्था में उसका अनुभव विलक्षण होता है। नवीन होता है। ऐसी दशा में आश्चर्यपूर्ण आनन्द की अनुभूति कलाकृति के पाठक या दर्शक को होती है। कवि के निजी व्यक्तित्व का ज्ञान प्राप्त करने की कौतुहलवृत्ति भी, कवि के इस आत्मसाक्षात्कार की प्रक्रिया प्रमुखता भावुक कलाकार या गीतिकार की विशेषता है।

एक सृजनात्मक आवश्यकता

काव्य या कला के सम्बन्ध में तथ्यवादी और दार्शनिक मूलभूत दृष्टिकोण यही है। जिस प्रकार ईश्वर की सृष्टि बराबर चलती रहती है उसी प्रकार यह काव्य रचना एक सृजनात्मक आवश्यकता है जिसको पूरा किये बिना सृजनकारी प्रतिभा से युक्त व्यक्ति रह नहीं सकता। कला, कला के लिए है यह दृष्टिकोण भी इसी पृष्ठभूमि पर आधारित है। काव्य अथवा कला के अन्य प्रयोजन इस प्रमुख प्रयोजन के उपरान्त ही प्रकट होते हैं। यह तो एक स्वयं सिद्ध प्रयोजन है।

काव्य के किन प्रयोजनों का उल्लेख किया है वे एक–दूसरे के पूरक हैं। विरोधी नहीं और किसी भी काव्य कृति में एक साथ देखे जाते हैं अतः काव्य, काव्य को समझने के लिए हमें व्यापक दृष्टि से विचार करना चाहिए। संस्कृत के आचार्यों ने एक साथ अनेक प्रयोजन स्वीकार किये हैं।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति और कलाओं में कुशलता प्राप्त करना। कीर्ति और प्रेम का अर्जन करना सम्भव होता है। अतः ये सब काव्य के प्रयोजन स्वरूप है।

निष्कर्ष

उक्त विवेचन के आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि काव्य–प्रयोजन चाहे कविनिष्ठ माने जावें या पाठकनिष्ठ, उनमें आनन्द की प्राप्ति और लोकमंगल की कामना सर्वोपरि स्थान रखते हैं। देखा जाए तो आनन्द प्रदान करनाकाव्य का आन्तरिक प्रयोजन है तथा अन्य सब बाह्य प्रयोजन है। यदि बाह्य–प्रयोजनों का विश्लेषण करें तो उनके परिणति भी अन्ततोगत्वा आनन्द में ही होती है। क्योंकि धनार्जन, यश प्राप्ति, उपदेश, व्यवहार–ज्ञान, मनोविज्ञान आदि सभी आनन्द के साधन है। पाश्चात्य विवेचकों और आचार्यों ने भी आनंदवाद को ही प्रमुखता दी है। भारतीय आचार्यों ने जो काव्य–रूपक उपस्थित किया है, उससे ही यही सिद्ध होता है कि चाहे लोक–मंगल का चिन्तन हो, चाहे कान्तासम्मित उपदेशात्मकता हो अथवा स्वान्तः सुखाय की भावना हो, यह भी आनन्दमय माना गया है। अतः आनन्द ही काव्य का मूल प्रयोजन है। अन्य प्रयोजन तो उसके सहचरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी, साहित्यालाप, पृ.सं.29
2. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, पृ.सं.28
3. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, पृ.सं.8
4. सुमित्रानंदन पंत, लोकायतन, पृ.सं.13
5. प्रेमचंद : साहित्य का उद्देश्य, 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ, लखनऊ सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण
6. मैथिलीशरण गुप्त, साकेत, पृ.सं.9
7. जयशंकर प्रसाद, लहर (ले चल वहाँ भुलावा देकर) पृ.सं. 18
8. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, राम की शक्ति पूजा, पृ.सं.31

❑❑❑